सपने में जागना

तुम तो जिंदगी को साक्षी बनकर कैसे देखोगे? तुम सपने तक को साक्षी बनकर नहीं देख पाते। सपने तक में लीन हो जाते हो! सपने तक में ऐसा मान लेते हो कि यही हो रहा है; यह सच है।

एक सम्राट का बेटा मर रहा था। एक ही बेटा। बुढ़ापे का एकमात्र सहारा; वही मालिक सारी सम्पदा का। सम्राट बड़ा बेचैन था। इलाज हो नहीं पा रहा था चिकित्सक थक गये थे। कोई सम्भावना बचने की न थी। आखिरी रात करीब आ गई। चिकित्सकों ने कहा : सुबह हो जाये तो गनीमत। रात ही समाप्त हो जाने की संभावना है। तो सम्राट रातभर जागकर बैठा रहा अपने बेटे के पास।

कोई चार बजे के करीब झपकी लग गई। सुबह की ठंडी हवा; रातभर का थका-मांदा, झपकी लग गई। झपकी लगी, तो एक सपना देखा। सपने में देखा कि बड़ा विशाल महल है। यह जो महल जागकर देखा था, यह कुछ भी नहीं। सोने का बना महल है। हीरे-जवाहरात जड़े हैं महल की सीढ़ियों पर। और उसके बारह बेटे हैं, उनकी बड़ी सुन्दर काया है। बड़े स्वस्थ, बड़े बुद्धिमान, बड़े अनूठे। ऐसे सुन्दर और ऐसे प्यारे, ऐसे बुद्धिमान युवक न तो कभी देखें, न सुने गये। शायद यह सपना उसी स्थिति के कारण पैदा हुआ।

एक ही बेटा, मर रहा है। एक था, वह भी जा रहा है। यह सारा मकान, ये सारे महल, यह राज्य पड़ा रह जायेगा। जिंदगीभर सम्राट ने मेहनत करके बनाया; खुद तो जायेगा ही अब, लेकिन कम से कम यही राहत रहती है कि बेटा भोगेगा, वह भी जा रहा है। लुट जायेगा यह सब। जिंदगीभर की मेहनत अजनबियों के हाथ पड़ जायेगी, परायों के हाथ पड़ जायेगी। जिनसे छीन-छीनकर ली थी, उन्हीं के पास लौट जायेगी। यह सब महल खंडहर हो जायेगा। यही कामना, यही वासना—यह मन में जाल रहा होगा, इसी से सपना पैदा हुआ। तृप्ति के लिये सपना पैदा होता है। जो जिंदगी में तृप्त नहीं होता, उसे हम सपने में पूरा करते हैं। दिन में उपवास कर लिया, रात तुम भोजन करोगे सपने में। दिन में एक सुंदर स्त्री राह से चलती देखी, आंख बचाकर निकल गये; डरे, घबड़ाये—कि कहीं यह सुन्दर स्त्री खींच ही न ले, आकर्षित ही न कर ले! कोई उपद्रव न खड़ा हो जाये! तुम चरित्रवान आदमी, घर-द्वारवाले; बाल-बच्चे, प्रतिष्ठा। आंख बचाकर निकल गये। लेकिन ऐसे निकलने से क्या होगा! रात सपने में वह स्त्री आ जायेगी। वह रात और सुन्दर होकर आ जायेगी। वह तुम्हारी सपने को चारों तरफ से घेर लेगी।

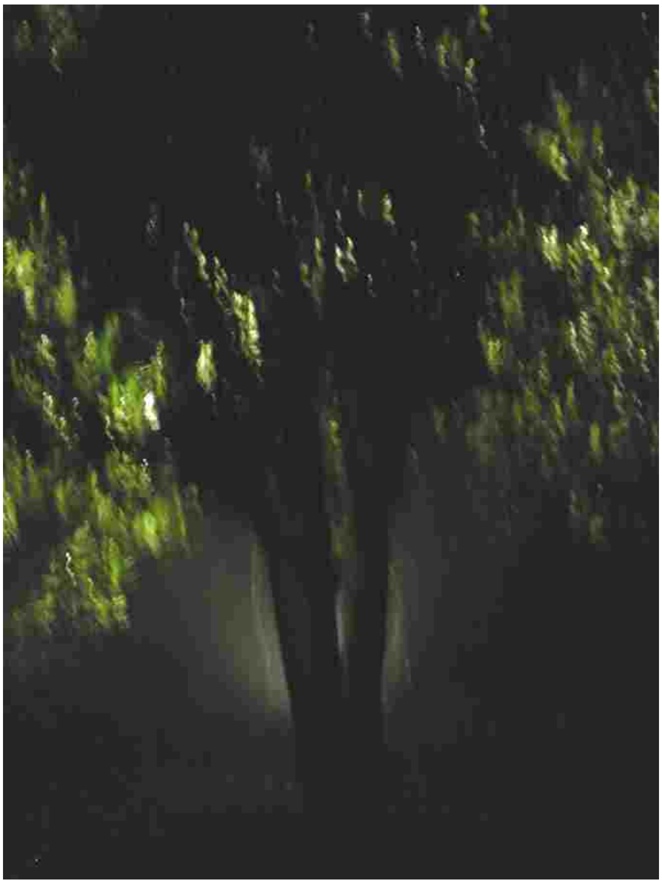

जो तुम दिन में अतृप्त छोड़ देते हो या दबा लेते हो, वही रात उभर आता है। तो सपना तो...। सपना बड़ा दिलफेंक होता है, कंजूस नहीं होता सपना। एक लड़का क्या देना; बारह दे दिये सपने में। सपने ही की बात है, तो लेना-देना क्या है? जब मकान ही देना है, तो क्या छोटा-सा साधारण मकान दे दिया! सोने का दे दिया।

हीरे-जवाहरात जड़े हैं सीढ़ियों पर। बड़ा साम्राज्य है। दूर-दूर तक सारी पृथ्वी...। चक्रवर्ती सम्राट है। बड़ा खुश है राजा। जितना दुखी था, उतना ही खुश हो गया। यह सपना है, यह भूल गया, लगा कि यही सच है।

हंसना मत, ऐसे ही रोज तुम भी सपने में भूल जाते हो। सम्राट तो तुम्हारा प्रतीक है। और तभी बाहर का बेटा मर गया। जब वह भीतर के बेटों के साथ मजा कर रहा था, प्रसन्न हो रहा था, बाहर का बेटा मर गया। पत्नी दहाड़ मार कर चिल्लायी। उसकी आवाज से सम्राट की नींद खुली। नींद खुलते ही सोने का महल गायब, बारह लड़के गायब, सारा राज्य गायब! सम्राट एक क्षण को ठगा रह गया।

ऐसा कभी-कभी तुम्हें भी होता है, कि कोई जल्दी जगा दे, जबरदस्ती जगा दे, झकझोर कर जगा दे आधी रात में, तो एक क्षण को तुम्हें समझ में नहीं आता कि क्या सच और क्या झूठ! एक क्षण को पक्का नहीं होता कि तुम कहां हो, कौन हो; क्योंकि अभी-अभी कुछ और थे, और एकदम से कुछ और हो गये! थोड़ा समय चाहिये। सपने से जागरण में आने में, जागरण से सपने में जाने में थोड़ी सीढ़ियां पार करनी होती हैं।

पत्नी ने दहाड़ मारकर चिल्ला दिया, तो सम्राट की अचानक टूट गयी नींद। चौंकर कुछ समझ में नहीं आया। सामने लड़का मरा पड़ा है—यह भी खयाल और अभी-अभी जो बारह लड़के थे, उनका भी खयाल; दोनों के बीच में खड़ा हो गया। रोया नहीं। हंसने लगा उलटा।

पत्नी तो समझी कि पागल हो गया। उसे डर था यही कि इतना प्यार है इसका बेटे से और बेटा मर रहा है।

जब सम्राट खिलखिलाकर हंसा, तो पत्नी समझी कि पागल हो गया है। उसने कहा कि 'मुझे डर था, वही हो गया। आप पागल तो नहीं हो गये हैं? बेटा मर गया—आप हंस रहे हैं?' उसने कहा कि 'मैं इसलिये हंस रहा हूं कि किसके लिये रोऊं?—उन बारह के लिये रोऊं जो अभी-अभी थे और बड़े सच थे? या इस एक के लिये रोऊं, जो अभी-अभी था और बड़ा सच था, और नहीं है? दोनों ही सपने टूट गये हैं। किसके लिये रोऊं? उन महलों के लिये, जो सोने के थे!' पत्नी ने कहा, 'कहां की बातें कर रहे हो? कहां के सोने के महल? कहां के बारह बेटे?' सम्राट ने तब अपना सपना कहा—कि 'इस सपने में मैं खोया था; बड़ा मस्त था। ऐसे ही यह भी एक सपना है। इस बेटे को मैं बिलकुल भूल गया था, जब भीतर के सपने में था। अब भीतर के बेटों को बिलकुल भूल गया हूं, जब यह बाहर मेरे बेटे को देख रहा हूं!'

तुम बार-बार रोज जागने से सोने में जाते हो, लेकिन सोने में रोज-रोज सपना देखते हो, सुबह जागकर पाते हो : झूठा था। लेकिन रात जब फिर दुबारा सोओगे, फिर सच हो जाता है। आदमी की भ्रांति कितनी गहन है!

गुरजिएफ अपने शिष्यों को कहता था कि तुम संसार में तब तक न जाग सकोगे, जब तक सपने में न जाग जाओ। उसने बड़े अद्‌भुत अनूठे मार्ग खोजे थे—सपने में जागने के। मैं तुमसे भी कहना चाहूंगा। वे मार्ग सच हैं और बड़े काम के हैं।

अगर तुम सपने में जागना सीख जाओ, तो तुम एक दिन अचानक पाओगे कि जागना भी एक बड़ा सपना है और कुछ भी नहीं। जब तक सपने में तादात्म्य नहीं टूटता, तब तक इस बड़े सपने में तो कैसे टूटेगा? बहुत मुश्किल है। इसलिये हिंदू इसको माया कहते हैं—इस बड़े सपने को माया कहते हैं।

— ओशो

कहै कबीर मैं पूरा पाया